१ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

अल्प आयु के शहीद

सूरा सो पहचानिये, जो लरै दीन के हेतु ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै, कबहु न छाडै खेतु ॥
(सलोक कबीर जी)

शहीद की परिभाषा

जो मनुष्य लगातार चुनौती देने पर भी अपने सच्च के आदर्श पर दृढ़ता से डटा हुआ अपने प्राणों की आहुति दे दे अथवा बलिदान हो जाए किन्तु अपनी धारणा में परिवर्तन न लाए, ऐसे बलिदानी पुरुष को शहीद कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिस मनुष्य को अपने प्राण सुरक्षित रखने के लिए शत्रुओं द्वारा अनेक लालच तथा अवसर प्रदान किया जाए फिर भी वह अपने आदर्शवादी मार्ग को त्याग देने की बजाये इस क्षण भंगुर शरीर को त्याग दे, वह शहीद कहलाता है। रणक्षेत्र में युद्धरत सैनिकों पर भी यही सिद्धांत लागू होता है। उन को भी विरोधी पक्ष के सैनिक शस्त्र – अस्त्र डाल देने के लिए विवश करते हैं। अथवा भागने का पूरा अवसर प्रदान करते हैं। किन्तु देश भक्त सैनिक ऐसा न कर, देश के काम आने को ही अपना लक्ष्य मानते हैं। अर्थात् विजय अथवा मृत्यु में से किसी एक की प्राप्ति की कामना ही उनको शहीद का दर्जा देती है।

प्रकाशक
क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखक : स. जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Download Free

भूमिका

यह वीर गाथा उन सुकुमारों की है ; जिन की शहादत के समय अभी दूध के दाँत भी नहीं गिरे थे। उन के पिता श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी तत्कालीन सम्राट औरंगज़ेब से लम्बे समय से लोहा ले रहे थे । सम्राट ने लम्बे युद्ध से परेशान होकर, विवशता में श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी को एक विशेष संधि का मुसौदा भेजा। जिस में उसने स्वयं पवित्र कुरान की शपथ लेकर गुरूदेव से आग्रह किया कि वह संधि पत्र की इबारत की विशेष धाराओं के अनुरूप देश के किसी भी क्षेत्र में बिना भय के विचरण कर सकते हैं; उन के जान–माल की सलामती (सुरक्षा) की जमानत दी जायेगी। ब–शर्ते कि वह एक बार हमारी आन–बान बनाये रखने के लिए आनंदपुर का किला खाली कर दें। इस बीच हमारा सैन्य बल आपको सकुशल कहीं भी जाने देंगा और किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचाएंगा।

गुरूदेव को औरंगज़ेब की कुरान की कसमों पर बिलकुल भी भरोसा न था। वह जानते थे कि राजनीतिज्ञ छल–कपटी होते हैं। अत: वह बहुत सतर्क थे। किन्तु किले में रसद के अभाव से तंग होकर सिख सैनिकों की और से भी गुरूदेव पर भारी दबाव बना हुआ था कि वह समय का लाभ उठाकर किले को त्याग दें। इस प्रकार संधि के अनुछेद दो के अनुसार गुरूदेव को किला त्यागने पर प्रशासन की ओर से सुरक्षा प्रदान की जानी थी। जिस पर सम्राट के अतिरिक्त वरिष्ठ सैनिक अधिकारीयों के हस्ताक्षर भी थे।

गुरूदेव ने सावधानी से कार्य करते हुए शीत ऋतु की सब से छोटी रात्रि के मध्य 20 दिसम्बर,1704 सन् को आनंदपुर का किला अकस्मात त्याग दिया। उस समय घनघोर वर्षा हो रही थी और सर्दी पूरे यौवन पर थी।

अल्प आयु के शहीद

रात अंधेरी और सरसा नदी की बाढ़ के कारण श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी का परिवार काफिले से बिछुड़ गया। माता गुजर कौर (गुजरी जी), के साथ उनके दो छोटे पोते थे, अपने रसोइये गंगा राम (गंगु) ब्राह्मण के साथ आगे बढ़ती हुई रास्ता भटक गई। उन्हें गँगा राम ने सुझाव दिया कि यदि आप मेरे साथ मेरे गांव सहेड़ी चलें तो यह संकट का समय सहज ही व्यतीत हो जाएगा। माता जी ने स्वीकृति दे दी और सहेड़ी गांव गँगा राम रसोइये के घर पहुँच गये। माता गुजरी जी के पास एक थैली थी, जिनमें कुछ स्वर्ण मुद्राएं थीं जिन पर गंगा राम की दृष्टि पड़ गई। गंगू की नीयत खराब हो गई। उसने रात में सोते हुए माता गुजरी जी के तकिये के नीचे से स्वर्ण मुद्राओं की थैली चुपके से चुरा ली और छत पर चढ़ कर चोर चोर का शोर मचाने लगा। माता जी ने उसे शांत कराने का प्रयास किया किन्तु गंगू तो चोर–चतुर का नाटक कर रहा था। इस पर माता जी ने कहा गंगू थैली खो गई है तो कोई बात नहीं, बस केवल तुम शांत बने रहो। किन्तु गंगू के मन में धैर्य कहां ?उन्हीं दिनों सरहिन्द के नवाब वजीद ख़ान ने गाँव–गाँव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि गुरूदेव व उनके परिवार को कोई पनाह न दे। पनाह देने वालों को सख्त सजा दी जायेगी और उन्हें पकड़वाने वालों को इनाम दिया जाएगा।

गँगा राम पहले तो यह ऐलान सुनकर भयभीत हो गया कि मैं खामख्वाह मुसीबत में फँस जाऊगा। फिर उसने सोचा कि यदि माता जी व साहिबज़ादों को पकड़वा दूं तो एक तो सूबे के कोप से बच जाऊँगा तथा दूसरा इनाम भी प्राप्त करूंगा।

गंगू नमक हराम निकला। उसने मोरिंडा की कोतवाली में कोतवाल को सूचना देकर इनाम के लालच में बच्चों को पकड़वा दिया। थानेदार ने माता जी से पूछताछ की, जब उसे मालूम हुआ गंगू ने ही स्वर्ण मुद्राएं चुराई हैं तो उसने इनाम देने के बदले, गंगू की खूब मरम्मत की और थैली बरामद कर ली।

थानेदार ने एक बैलगाड़ी में माता जी तथा बच्चों को सरहिन्द के नवाब वज़ीद ख़ान के पास कड़े पहरे में भिजवा दिया। वहां उन्हें सर्द ऋतु की रात में ठण्डे बुरज में बन्द कर दिया गया और उनके लिए भोजन की व्यवस्था तक नहीं की गई। दूसरी सुबह एक दोधी ने माता जी तथा बच्चों को दूध पिलाया।

नवाब वज़ीदखान जो गुरू गोबिन्द सिंघ जी को जीवित पकड़ने के लिए सात माह तक सेना सहित आनन्दपुर के आसपास भटकता रहा, परन्तु निराश होकर वापस लौट आया था, उसने जब गुरूदेव के मासूम बच्चों तथा वृद्ध माता को अपने कैदियों के रूप में देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अगली सुबह बच्चों को कचहरी में पेश करने के लिए फरमान जारी कर दिया।

दिसम्बर की बर्फ जैसी ठण्डी रात को, ठण्डे बुरज में बैठी माता गुजरी जी अपने नन्हें नन्हें दोनों पोतों को शरीर के साथ लगाकर गर्माती और चूम – चूम कर सुलाने का प्रयत्न करती रहीं।

माता जी ने भोर होते ही मासूमों को जगाया तथा स्नेह से तैयार किया। दादी – पोतों से कहने लगी 'पता हैं! तुम उस गोबिन्द सिंघ 'शेर' गुरू के बच्चे हो, जिसने अत्याचारियों से कभी हार नहीं मानी। धर्म की आन तथा शान के बदले जिसने अपना सर्वत्र दांव पर लगा दिया और इससे पहले अपने पिता को भी शहीदी देने के लिए प्रेरित किया था। देखना कहीं वज़ीद ख़ान द्वारा दिये गये लालच अथवा भय के कारण धर्म में कमजोरी न दिखा देना। अपने पिता व धर्म की शान को जान न्यौछावर करके भी कायम रखना।

दादी, पोतों को यह सब कुछ समझा ही रही थी कि वज़ीद ख़ान के सिपाही दोनों साहिबजादों को कचहरी में ले जाने के लिए आ गये। जाते हुए दादी माँ ने फिर सहिबजादों को चूमा और पीठ पर हाथ फेरते हुए उन्हें सिपाहियों के संग भेज दिया।

कचहरी का बड़ा दरवाजा बंद था। साहिबज़ादों को खिड़की से अन्दर प्रवेश करने को कहा गया। रास्ते में उन्हें बार बार कहा गया था कि कचहरी में घुसते ही नवाब के समक्ष शीश झुकाना है। जो सिपाही साथ जा रहे थे वे पहले सर झुका कर खिड़की के द्वारा अन्दर दाखिल हुए। उनके पीछे साहबज़ादे थे। उन्होंने खिड़की में पहले पैर आगे किये और फिर सिर निकाला। थानेदार ने बच्चों को समझाया कि वे नवाब के दरबार में झुककर सलाम करें, किन्तु बच्चों ने इसके विपरीत उत्तर दिया और कहा – यह सिर हमने अपने पिता गुरू गोबिन्द सिंघ के हवाले किया हुआ है, इसलिए इस को कहीं और झुकाने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

कचहरी में नवाब वज़ीदखान के साथ और भी बड़े बड़े दरबारी बैठे हुए थे। दरबार में प्रवेश करते ही जोरावर सिंघ तथा फतेह सिंघ दोनों भाईयों ने गर्ज कर जयकारा लगाया - 'वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतेह'। नवाब तथा दरबारी, बच्चों का साहस देखकर आश्चर्य में पड़ गये। एक दरबारी सुच्चा नंद ने बच्चों से कहा - ऐ बच्चों ! नवाब साहब को झुककर सलाम करो। साहिबज़ादों ने उत्तर दिया, 'हम गुरू तथा ईश्वर के अतिरिक्त किसी को भी शीश नहीं झुकाते, यही शिक्षा हमें प्राप्त हुई है'।

नवाब वज़ीदखान कहने लगा, - 'ओए तुम्हारा पिता तथा तुम्हारे दोनों बड़े भाई युद्ध में मार दिये गये हैं। तुम्हारी तो किस्मत अच्छी है जो मेरे दरबार में जीवित पहुँच गये हो। इस्लाम धर्म को कबूल कर लो तो तुम्हें रहने को महल, खाने को भांति भांति के पकवान तथा पहनने को रेशमी वस्त्र मिलेंगे। तुम्हारी सेवा में हर समय सेवक रहेंगे। बड़े हो जाओगे तो बड़े-बड़े मुसलमान जरनैलों की सुन्दर बेटियों से तुम्हारी शादी कर दी जायेगी। तुम्हें सिक्खी से क्या लेना है ?सिक्ख धर्म को हमने जड़ से उखाड़ देना है। हम सिक्ख नाम की किसी वस्तु को रहने ही नहीं देंगे। यदि मुसलमान बनना स्वीकार नहीं करोगे तो कष्ट दे देकर मार दिये जाओगे और तुम्हारे शरीर के टुकड़े सड़कों पर लटका दिये जायंगे ताकि भविष्य में कोई सिक्ख बनने का साहस ना कर सके।'' नवाब बोलता गया। पहले तो बच्चे उसकी मूर्खता पर मुस्कराते रहे, फिर नवाब द्वारा डराने पर उनके चेहरे लाल हो गये।

इस बार जोरावर सिंघ दहाड़ उठा - हमारे पिता अमर हैं। उसे मारने वाला कोई जन्मा ही नहीं। उस पर अकाल पुरूष (प्रभु) का हाथ है। उस वीर योद्धा को मारना असम्भव है। दूसरी बात रही, इस्लाम कबूल करने की , तो हमें सिक्खी जान से अधिक प्यारी है। दुनियां का कोई भी लालच व भय हमें सिक्खी से नहीं गिरा सकता। हम पिता गुरू गोबिन्द सिंघ के शेर बच्चे हैं तथा शेरों की भान्ति किसी से नहीं डरते। हम इस्लाम धर्म कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे। तुमने जो करना हो, कर लेना। हमारे दादा श्री गुरू तेग बहादुर साहिब ने शहीद होना तो स्वीकार कर लिया परन्तु धर्म से विचलित नहीं हुए। हम उसी दादा जी के पोते हैं, हम जीते जी उनकी शान को आंच नहीं आने देंगे।

सात वर्ष के जोरावर सिंघ तथा पाँच वर्ष के फतेह सिंघ के मुँह से बहादुरों वाले ये शब्द सुनकर सारे दरबार में चुप्पी छा गई। नवाब वज़ीद ख़ान भी बच्चों की बहादुरी से प्रभावित हुए बिना न रह सका। परन्तु उसने काज़ी को साहिबज़ादों के बारे में फतवा (सजा) देने को कहा - काज़ी ने उत्तर दिया कि बच्चों के बारे में फतवा (दण्ड) नहीं सुनाया जा सकता। इस पर सुच्चानन्द बोला, - इतनी अल्प आयु में ये राज दरबार में इतनी आग उगल सकते हैं तो बड़े होकर तो हकूमत को ही आग लगा देंगे। ये बच्चे नहीं, साँप हैं, सिर से पैर तक ज़हर से भरे हुए। एक गुरू गोबिन्द सिंघ ही बस में नहीं आते तो जब ये बड़े हो गये तो उससे भी दो कदम आगे बढ़ जायेंगे। साँप को पैदा होते ही मार देना चाहिए। देखो, इनका हौसला ! नवाब का अपमान करने से नहीं झिझके। इनका तो अभी से काम तमाम कर देना चाहिए। नवाब ने बाकी दरबारियों की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा कि कोई और सुच्चानन्द की बात का समर्थन करता है अथवा नहीं, परन्तु सभी दरबारी मूर्तिव्रत खड़े रहे। किसी ने भी सुच्चा नन्द की हाँ में हाँ नहीं मिलाई।

तब वज़ीद ख़ान ने मालेरकोटले के नवाब से पूछा, - ''आपका क्या ख्याल है ?आपका भाई और भतीजा भी तो गुरू के हाथों चमकौर में मारे गये हैं। लो अब शुभ अवसर आ गया है बदला लेने का, इन बच्चों को मैं आपके हवाले करता हूँ। इन्हें मृत्यु दण्ड देकर आप अपने भाई - भतीजे का बदला ले सकते है।''

मालेरकोटले का नवाब पठान पुत्र था। उस शेर दिल पठान ने मासूम बच्चों से बदला लेने से साफ इन्कार कर दिया और उसने कहा, - ''इन बच्चों का क्या कसूर है ?यदि बदला लेना ही है तो इनके बाप से लेना चाहिए। मेरा भाई और भतीजा गुरू गोबिन्द सिंघ के साथ युद्ध करते हुए रणक्षेत्र में शहीद हुए हैं, कत्ल नहीं किये गये हैं। इन बच्चों को मारना मैं बुज़दिली समझता हूँ। अत: इन बेकसूर बच्चों को छोड़ दीजिए। मालेरकोटले का नवाब शेरमुहम्मद ख़ान चमकौर के युद्ध से वज़ीद ख़ान के साथ ही वापिस आया था और वह अभी सरहिन्द में ही था।

नवाब पर सुच्चा नन्द द्वारा बच्चों के लिए दी गई सलाह का प्रभाव तो पड़ा, पर वह बच्चों को मारने की बजाय इस्लाम में शामिल करने के हक में था। वह चाहता था कि इतिहास के पन्नों पर लिखा जाय कि गुरू गाबिन्द सिंघ के बच्चों ने सिख धर्म से इस्लाम को अच्छा समझा और मुसलमान बन गए। अपनी इस इच्छा की पूर्ति हेतु उसने गुस्से पर नियंत्रण कर लिया तथा कहने लगा, "बच्चों जाओ, अपनी दादी के पास। कल आकर मेरी बातों का सही - सही सोचकर उत्तर देना। दादी से भी सलाह कर लेना। हो सकता है तुम्हें प्यार करने वाली दादी तुम्हारी जान की रक्षा के लिए तुम्हारा इस्लाम में आना कबूल कर ले।"

बच्चे कुछ कहना चाहते थे परन्तु वज़ीद ख़ान शीघ्र ही उठकर एक तरफ हो गया और सिपाही बच्चों को दादी मां की ओर लेकर चल दिए।

बच्चों को पूर्ण सिक्खी स्वरूप में तथा चेहरों पर पूर्व की भांति जलाल देखकर दादी ने सुख की सांस ली। अकाल पुरख का दिल से धन्यवाद किया और बच्चों को बाहों में समेट लिया। काफी देर तक बच्चे दादी के अलिंग्न में प्यार का आनन्द लेते रहे। दादी ने आंखें खोलीं कलाई ढीली की, तब तक सिपाही जा चुके थे।

अब माता गुजरी जी आहिस्ता - आहिस्ता पोतों से कचहरी में हुए वार्तालाप के बारे में पूछने लगी। बच्चें भी दादी मां को कचहरी में हुए वार्तालाप के बारे में बताने लगे। उन्होंने सुच्चा नन्द की ओर से जलती पर तेल डालने के बारे भी दादी मां को बताया।

दादी मां ने कहा, ''शाबाश बच्चों! तुमने अपने पिता तथा दादा की शान को कायम रखा है। कल फिर तुम्हें कचहरी में और अधिक लालच तथा डरावे दिये जाएंगे। देखना, आज की भाँति धर्म को जान से भी अधिक प्यारा समझना और ऐसे ही दृढ़ रहना। अगर कष्ट दिए जाएँ तो अकाल पुरख का ध्यान करते हुए श्री गुरू तेग बहादुर साहिब और श्री गुरू अर्जुन देव साहिब की शहादत को सामने लाने का प्रयास करना। भाई मतिदास और भाई दयाला ने भी गुरू चरणों का ध्यान करते हुए मुस्कराते - मुस्कराते तन चिरवा लिया और पानी में उबलवा लिया था। तुम्हारे विदा होने पर मैं भी तुम्हारे सिक्खी - सिदक की परिपक्ता के लिए गुरू चरणों में और अकाल पुरख के समक्ष सिमरन में जुड़ कर अरदास करती रहुँगी हूँ। यह कहते - कहते दादी माँ बच्चों को अपनी अलिंगन (गोद, बगल) में लेकर सो गई।

अगले दिन भी कचहरी में पहले जैसे ही सब कुछ हुआ और भी ज्यादा लालच दिये गये तथा धमकाया गया। बच्चे धर्म से नहीं डोले। नवाब ने लालच देकर बच्चों को धर्म से फुसलाने का प्रयत्न किया। उसने कहा कि यदि वे इस्लाम स्वीकार कर लें तो उन्हें जागीरें दी जाएंगी। बड़े होकर शाही खानदान की शहज़ादियों के साथ विवाह कर दिया जाएगा। शाही खजाने के मुँह उनके लिए खोल दिए जाएंगे।

नवाब का ख्याल था कि भोली-भाली सूरत वाले ये बच्चे लालच में आ जाएंगे। पर वे तो गुरू गोबिन्द सिंघ के बच्चे थे, मामूली इन्सान के नहीं। उन्होंने किसी शर्त अथवा लालच में आकर इस्लाम स्वीकार करने से एकदम इन्कार कर दिया।

अब नवाब धमकियों पर उतर आया। गुस्से से लाल पीला होकर कहने लगा - 'यदि इस्लाम कबूल न किया तो मौत के घाट उतार दिए जाओगे। फाँसी चढ़ा दूँगा। जिन्दा दीवार में चिनवा दूँगा। बोलो, क्या मंजूर है - मौत या इस्लाम ? -

ज़ोरावर सिंघ ने हल्की सी मुस्कराहट होठों पर लाते हुए अपने भाई से कहा, 'भाई, हमारे शहीद होने का अवसर आ गया है। ठीक उसी तरह जैसे हमारे दादा गुरू तेगबहादुर ने दिल्ली के चाँदनी चौक में शीश देकर शहीदी पाई थी। तुम्हारा क्या ख्याल है?

फतेह सिंघ ने उत्तर दिया, 'भाई जी, हमारे दादा जी ने शीश दिया पर धर्म न हीं छोड़ा। उनका उदाहरण हमारे सामने है। हमने खण्डे का अमृत पान किया हुआ है। हमें मृत्यु से क्या भय?मेरा तो विचार है कि हम भी अपना शीश धर्म के लिए देकर मुगलों पर प्रभु के कहर की लानत डालें।

ज़ोरावर सिंघ ने कहा,- ''हम गुरू गोबिन्द सिंघ जैसी महान् हस्ती के पुत्र हैं। जैसे हमारे दादा गुरू तेगबहादुर शहीद हो चुके हैं। वैसे ही हम अपने खानदान की परम्परा को बनाए रखेंगे। हमारे खानदान की रीति है, 'सिर जावे तो जावे, पर सिक्खी सिदक न जाये।' हम धर्म परिवर्तन की बात ठुकरा कर फाँसी के तख्ते को चूमेंगे।'

जोश में आकर फतेह सिंघ ने कहा - 'सुन रे सूबेदार ! हम तेरे दीन को ठुकराते हैं। अपना धर्म नहीं छोड़ेंगे। अरे मूर्ख, तू हमें दुनिया का लालच क्या देता है ?हम तेरे झांसे में आने वाले नहीं। हमारे दादा जी को मार कर मुगलों ने एक अग्नि प्रज्वलित कर दी है, जिसमें वे स्वयँ भस्म होकर रहेंगे। हमारी मृत्यु इस अग्नि को हवा देकर ज्वाला बना देगी।

सुच्चा नन्द ने नवाब को परामर्श दिया कि बच्चों की परीक्षा ली जानी चाहिए। अत: उनको अनेकों भान्ति भान्ति के खिलौने दिये गये। बच्चों ने उन खिलौनों में से धनुष बाण, तलवार इत्यादि अस्त्र-शस्त्र रूप वाले खिलौने चुन लिए। जब उन से पूछा गया कि इससे आप क्या करोगे तो उनका उत्तर था युद्ध अभ्यास करेंगे। वजीद ख़ान ने चढ़दी कला के विचार सुनकर; काज़ी के मन में यह बात बैठ गई कि सुच्चा नन्द ठीक ही कहता है कि साँप के बच्चे साँप ही होते हैं। वजीद ख़ान ने काज़ी से परामर्श करने के पश्चात् उसको दोबारा फतवा देने को कहा - इस बार काज़ी ने कहा कि बच्चे कसूरवार हैं क्योंकि बगावत पर तुले हुए हैं। इनको किले की दीवारों में चिन कर कत्ल कर देना चाहिए।

कचहरी में बैठे मालेरकोटले के नवाब शेर मुहम्मद ने कहा, "नवाब साहब इन बच्चों ने कोई कसूर नहीं किया इनके पिता के कसूर की सज़ा इन्हें नहीं मिलनी चाहिए। इस्लाम की शरह अनुसार सज़ा उसी को मिलनी चाहिए जो कसूरवार हो, दूसरों को नहीं।"

काज़ी बोला, "शेर मुहम्मद! इस्लामी शरह को मैं तुमसे बेहतर जानता हूँ। मैंने शरह के अनुसार ही सजा सुना दी है।"

तीसरे दिन बच्चों को कचहरी भेजते समय दादी माँ की आँखों के सामने होने वाले काण्ड की तस्वीर बनती जा रही थी। दादी माँ को निश्चय था कि आज का बिछोड़ा बच्चों से सदा के लिए बिछोड़ा बन जाएगा। परन्तु यकीन था माता गुजरी जी को कि मेरे मासूम पोते आज जीवन कुर्बान करके भी धर्म की रक्षा करेंगे।

मासूम पोतों को जी भर कर प्यार किया, माथा चूमा, पीठ थपथपाई और विदा किया बावर्दी सिपाहियों के साथ, होनी से निपटने के लिये। दादी माँ टिकटिकी लगा कर तब तक सुन्दर बच्चों की ओर देखती रही जब तक वे आँखों से ओझल न हो गये।

माता गुजरी जी पोतों को सिपाहियों के साथ भेज कर वापिस ठंडे बुरज में गुरू चरणें में ध्यान लगा कर वाहिगुरू के दर पर प्रार्थना करने लगी, "हे अकाल पुरख! बच्चों के सिक्खी – सिदक को कायम रखने में सहाई होना। दाता! धीरज और बल देना इन मासूम गुरू पुत्रों को ताकि बच्चे कष्टों का सामना बहादुरी से कर सकें।

तीसरे दिन साहिबज़ादों को कचहरी में लाकर डराया धमकाया गया। उनसे कहा गया कि यदि वे इस्लाम अपना लें तो उनका कसूर माफ किया जा सकता है और उन्हें शहजादों जैसे सुख – सुविधाएं प्राप्त हो सकती हैं। किन्तु साहिबज़ादे अपने निश्चय पर अटल रहे। उन की दृढ़ता थी कि सिक्खी शान केशों श्वासों के संग निभानी हैं। उनकी दृढ़ता को देख कर उन्हें किले की दीवार की नींव में चिनवाने की तैयारी आरम्भ कर दी गई किन्तु बच्चों को शहीद करने के लिए कोई जल्लाद तैयार न हुआ। अकस्मात् दिल्ली के शाही जल्लाद साशल बेग व बाशल बेग अपने एक मुकद्दमें के सम्बन्ध में सरहिन्द आये। उन्होंने अपने मुकद्दमें में माफी का वायदा लेकर साहिबज़ादों को शहीद करना मान लिया। बच्चों को उनके हवाले कर दिया गया। उन्होंने जोरावर सिंघ व फतेह सिंघ को किले की नींव में खड़ा करके उनके आस पास दीवार चिनवानी प्रारम्भ कर दी।

बनते – बनते दीवार जब फतेह सिंघ के सिर के निकट आ गई तो जोरावर सिंघ दु:खी दीखने लगे। काज़ियों ने सोचा शायद वे घबरा गए हैं और अब धर्म परिवर्तन के लिए तैयार हो जायेंगे। उनसे दु:खी होने का कारण पूछा गया तो जोरावर बोले "मृत्यु भय तो मुझे बिल्कुल नहीं। मैं तो सोचकर उदास हूं कि मैं बड़ा हूं, फतेह सिंघ छोटा हैं। दुनिया में मैं पहले आया था। इसलिए यहां से जाने का भी पहला अधिकार मेरा है। फतेह सिंघ को धर्म पर बलिदान हो जाने का सुअवसर मुझ से पहले मिल रहा है।

छोटे भाई फतेह सिंघ ने गुरूवाणी की पंक्ति कहकर दो वर्ष बड़े भाई को सांत्वना दी।ह

चिंता ताकि कीजिए, जो अनहोनी होइ।

इमारगि सँसार में, नानक थिर नहि कोइ।

और धर्म पर दृढ़ बने रहने का संकल्प दोहराया –

बच्चों ने अपना ध्यान गुरू चरणों में जोड़ा और गुरूबाणी का पाठ करने लगे। पास में खड़े काज़ी ने कहा– "अभी भी मुसलमान बन जाओ, छोड़ दिये जाओगे। बच्चों ने काज़ी की बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया अपितु उन्होंने अपना मन प्रभु से जोड़े रखा। दीवार फतेह सिंघ के गले तक पहुंच गई काज़ी के संकेत से एक जल्लाद ने फतेह सिंघ तथा उस के बड़े भाई जोरावर सिंघ का शीश तलवार के एक वार से कलम कर दिया। इस प्रकार श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी के सुपुत्रों ने अल्प आयु मे ही शहादत प्राप्त की।

माता गुजरी जी बच्चे के लौटने की प्रतीक्षा में गुम्बद की मीनार पर खड़ी होकर राह निहार रही थी कि उन को पीछे से किसी दुष्ट ने धक्का दे दिया जिस से वह लड़खड़ा कर नीचे गिर पड़ी और उन का निधन हो गया।

स्थानीय निवासी जौहरी टोडरमल को जब गुरूदेव के बच्चों को यातनाएँ देकर कत्ल करने के हुक्म के विषय में ज्ञात हुआ तो वह अपना समस्त धन लेकर बच्चों को छुड़वाने के विचार से कचहरी पहुँचा किन्तु उस समय बच्चों को शहीद किया जा चुका था। उसने नवाब से अंत्येष्टि क्रिया के लिए बच्चों के शव माँगे। वज़ीद ख़ान ने कहा – यदि तुम इस कार्य के लिए भूमि, स्वर्ण मुद्राएं बिछा कर खरीद सकते हो तो तुम्हें शव दिये जा सकते हैं। टोडरमल ने अपना समस्त धन भूमि पर बिछाकर एक चारपाई जितनी भूमि खरीद ली और तीनों शवों की एक साथ अंत्येष्टि कर दी।

यह सारा किस्सा गुरू के सिक्खों ने गुरू गोबिन्द सिंघ को नूरी माही द्वारा सुनाया गया तो उस समय अपने हाथ में पकड़े हुए तीर की नोंक के साथ एक छोटे से पौधे को जड़ से उखाड़ते हुए उन्होंने कहा – जैसे मैंने यह पौधा जड़ से उखाड़ा है, ऐसे ही तुरकों की जड़ें भी उखाड़ी जाएंगी।

फिर गुरू साहिब ने सिक्खों से पूछा – 'मलेर–कोटले के नवाब के अतिरिक्त किसी और ने मेरे बच्चों के पक्ष में आवाज़ उठाई थी ?सिक्खों ने सिर हिलाकर नकारात्मक उत्तर दिया।

इस पर गुरू साहिब ने फिर कहा – 'तुरकों की जड़ें उखड़ने के बाद भी मलेर–कोटले के नवाब की जड़ें कायम रहेंगी, पर मेरे सिक्ख एक दिन सरहिन्द की ईंट से ईंट बजा देंगे'। यह घटना 13 पौष तदानुसार 27 दिसम्बर 1704 ईस्वी में घटित हुई।

नोटः – मलेरकोटले की जड़ें आज तक कायम हैं। बन्दा बहादुर ने 1710 में सचमुच सरहिन्द शहर की ईंट से ईंट बजा दी थी।

जिस कुल जाति कौम के बच्चे यूं करते हैं बलिदान।
उस का वर्तमान कुछ भी हो परन्तु भविष्य है महान।

मैथिली शरण गुप्त

यह गर्दन कट तो सकती है मगर झुक नहीं सकती।
कभी चमकौर बोलेगा कभी सरहिन्द की दीवार बोलेगी।।

सरदार पंछी

हम अपनी जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिंघों की सल्तनत का पौधा लगा चले।।

हकीम अल्ला यार खाँ जोगी

पाठकों के लिए विनती

1. पुस्तक को स्वयं पढ़ें तथा अन्य पाठकों को भी पढ़ाने का कष्ट करें।
2. आप को इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित करवाने का अधिकार है। कृप्या यह सेवा निःशुल्क करें।

Down-load Free

समाप्त

निम्नलिखित वेबसाइट में दस गुरूजनों का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत विस्तृत रूप में अवश्य देखें तथा पढ़ें।

www.sikhworld.info
or
www.sikhhistory.in

E-mail : info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

ਉਪਰੋਕਤ ਵੇਬ ਸਾਇਟ ਵਿੱਚ ਦਸ ਗੁਰੂਸਾਹਿਬਾਂਨ ਦਾ ਸੰਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਬਿਊਰਾ ਵਿਸਤਾਰ ਸਹਿਤ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਖੋ ਅਤੇ ਪੜੋ ਜੀ।

इस वैब साईट की विशेषता

इस में है एक विशाल सिक्ख संग्रहालय (Museum)

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन वृंत्तातों से सम्बन्धित घटना क्रमों के चित्रों से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन काल तक काल्पनिक तस्वीरों जो इतिहास के द्रसाती हैं तथा उनके नीचे हैं हिन्दी और पंजाबी में टिप्पड़ियां (फुटनोट) जो घटनाक्रम अथवा इतिहासिक प्रसंगों का वर्णन करती हैं।

नोटः – यह कार्य बच्चों की रुची को मद्देनज़र रख कर किया गया है ताकि वे सहज में अपना इतिहास जान सके। मुझे आशा है सिक्ख जगद् के किशौर अथवा युवक इस विधि से लभान्वित होंगे क्यों कि इस प्रणाली में आधी बात तस्वीरे कहती हैं तथा आधी बात निम्नलिखित फुटनोट कहते हैं। इस प्रकार पाठकों के मन में अपने इतिहास को जानने के प्रति रुची जागृत हो जाती है। अब आप इस के आगे सत्तारवीं + अठारहवीं + उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी के शहीदों के चित्र फुटनोट सहित देखेंगे। इस के साथ ही सिक्ख महापुरुषों अथवा महान व्यक्ति के लोग को भी देखेंगे। और टिप्पड़ियों द्वारा जाने जाएगे। कृप्या आप सिक्ख मयुजियम पर अवश्य ही किलिक किजिए।

नोट :–

1. इस वृतांत को आगे पढ़ने के लिए कृपया जीवन वृतांत गुरू अंगद देव जी पढ़े।
2. यदि कोई इसे पुनः प्रकाशित करवाना चाहे तो वह निःशुल्क बटवा सकता है।